RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

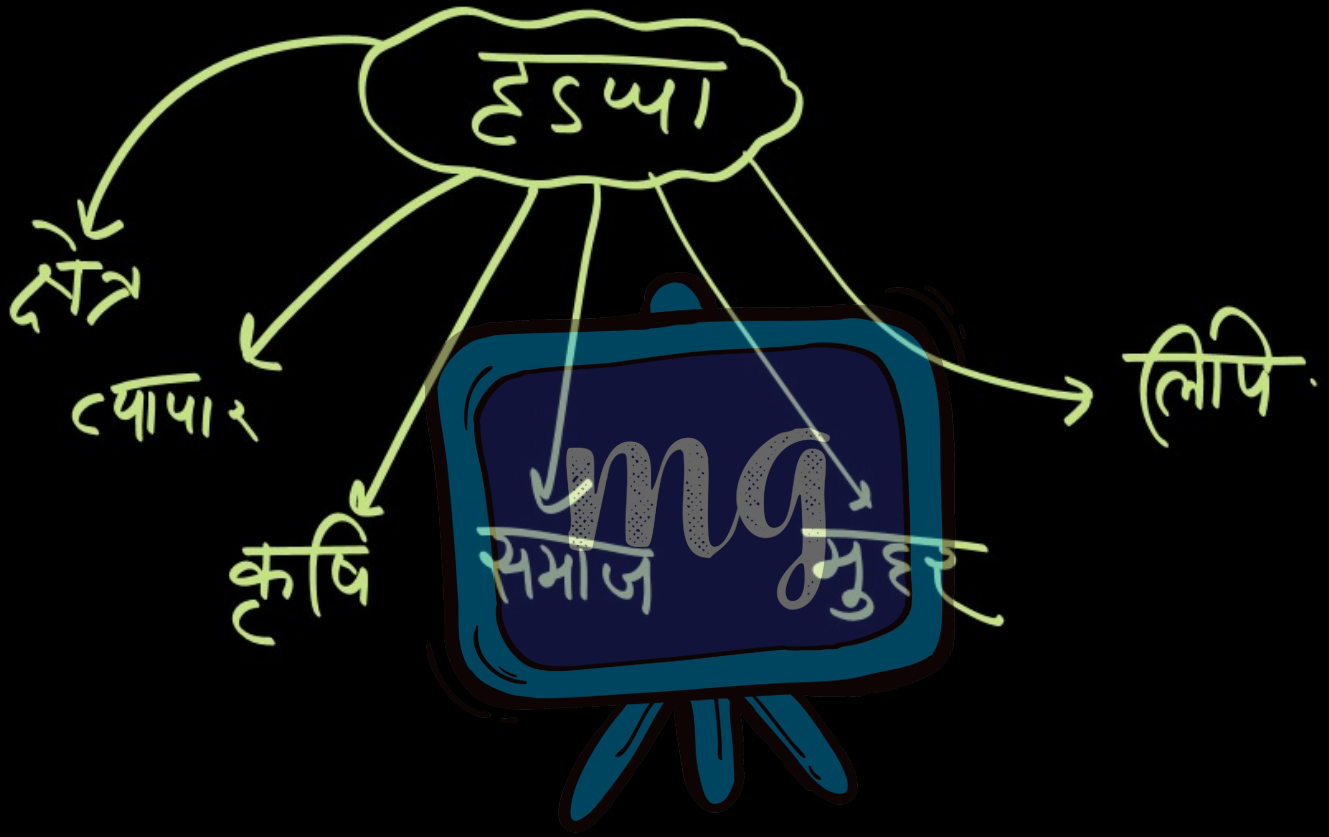
ARJUN BATCH

ईंटें, मनके तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

अध्याय-1 | भाग-6




हड़प्पा
क्षेत्र
व्यापार
कृषि
समाज
मुहर
लिपि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

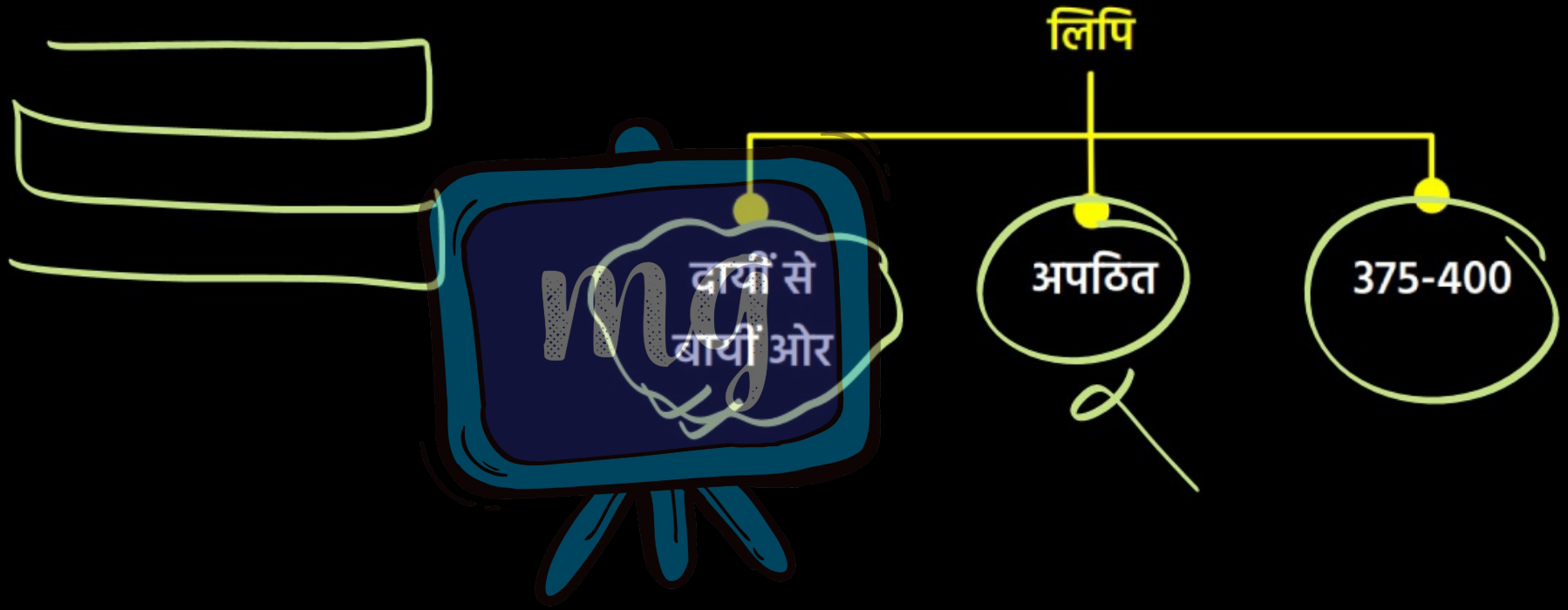




एक प्राचीन सूचनापट्ट

लिपि (रहस्यमय)

- हड़प्पाई मुहरों में एक पंक्ति में लिखा हुआ संभवतः मालिक के नाम व पट्टी को दर्शाता है।
- इस पर बना चित्र (आमतौर पर जानवर का) अनपढ़ लोगों को सांकेतिक रुप से इसका अर्थ बताता था।
- अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त है सबसे लंबे अभिलेख में 26 चिन्ह हैं।


लिपि
अपठित
375-400
दायीं से
बायीं ओर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

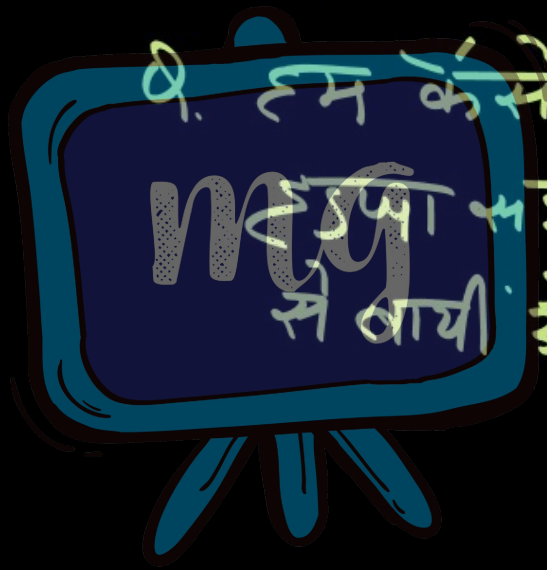
- यह लिपि अब तक पढ़ी नहीं जा सकी है, लेकिन यह वर्णमालीय नहीं लगती क्योंकि इसमें 375 से 400 चिन्ह हैं।
- वर्णमालीय लिपियों में स्वर और व्यंजन के चिन्ह होते हैं।
- यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती होगी, क्योंकि दाईं ओर चौड़ा अंतराल और बाईं ओर संकुचन है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. हड़प्पा सभ्यता की लिपि के बारे में बताइये?

Q. हम कैसे कह सकते हैं की हड़प्पा सभ्यता की लिपि दायी से बायी ओर लिखी जाती थी?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

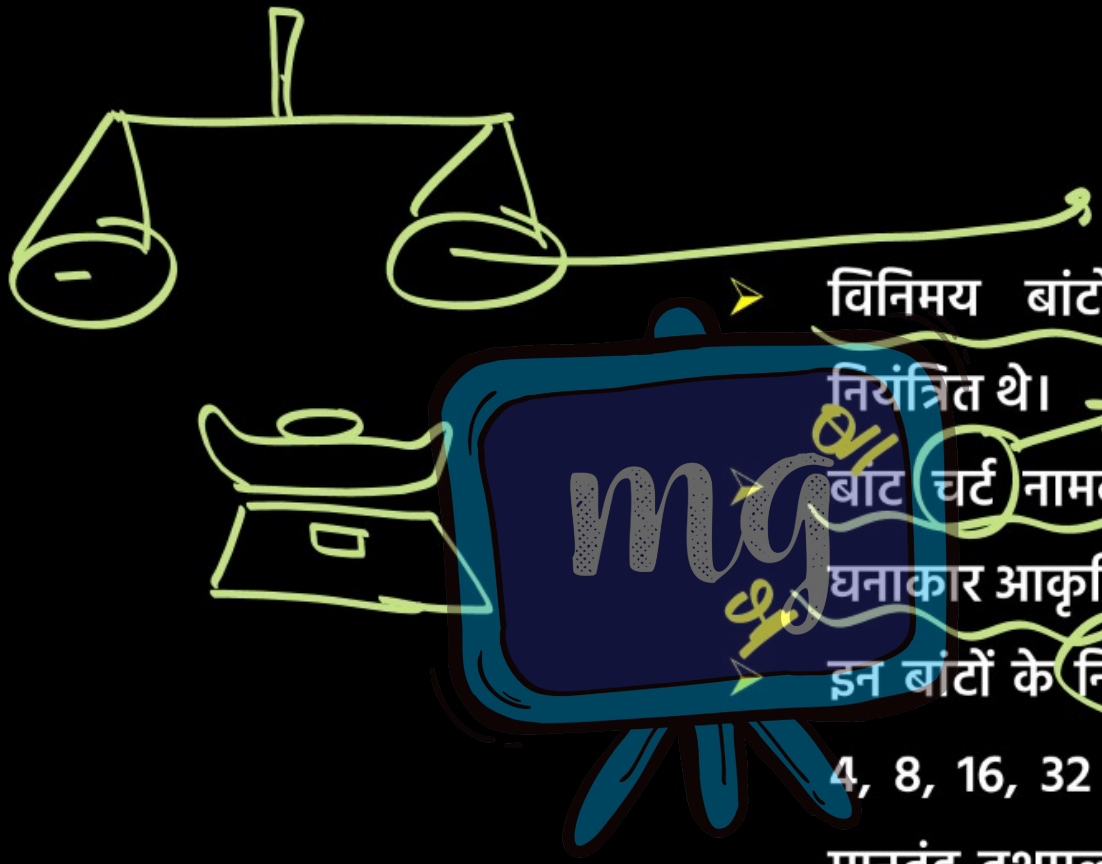
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लिखावटें : मुहरों, औजारों, मर्तबानों, आभूषणों, अस्थि छड़ों और सूचना पट्टे पर मिली हैं, जिससे साक्षरता व्यापक साबित होती है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

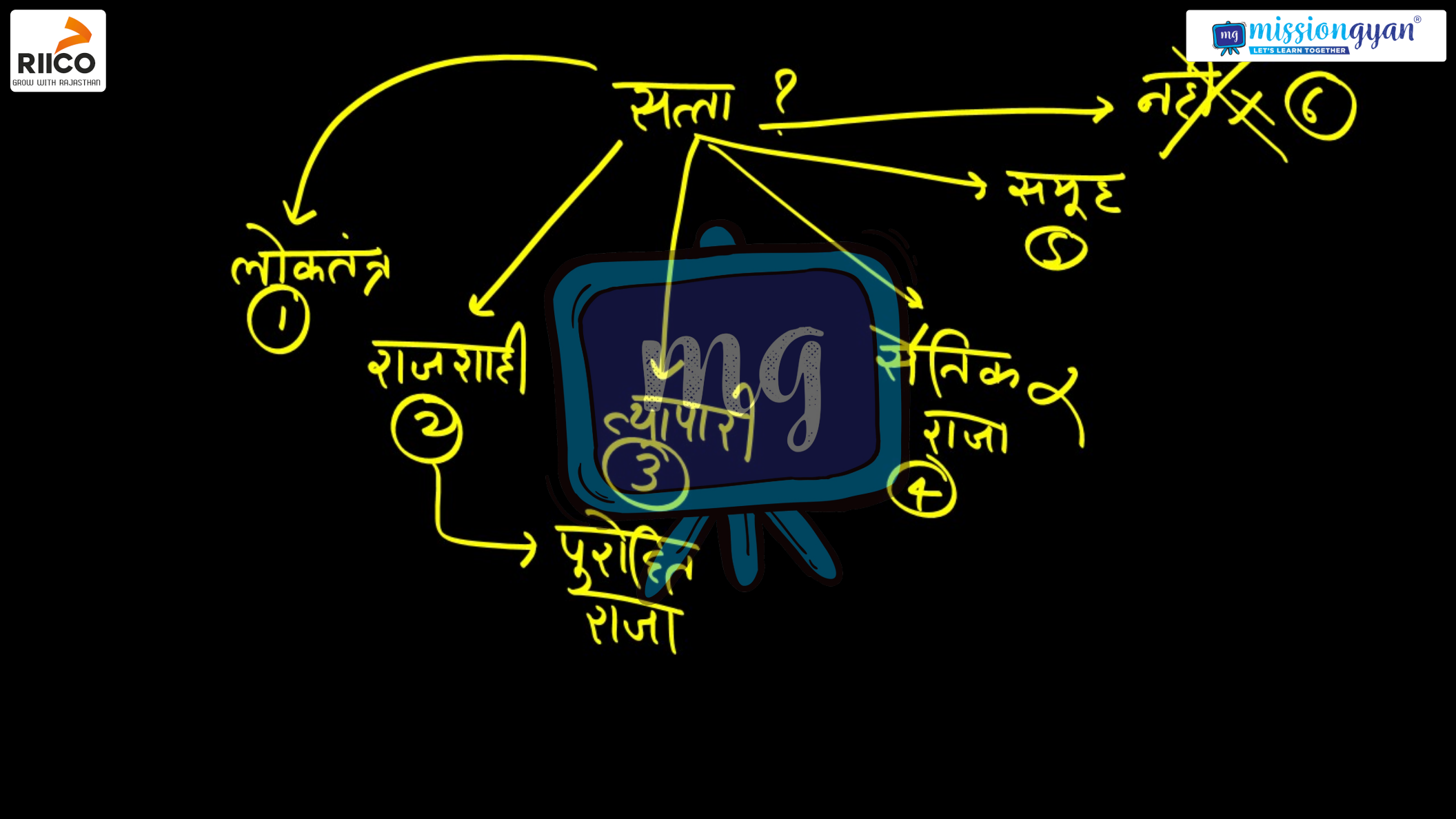


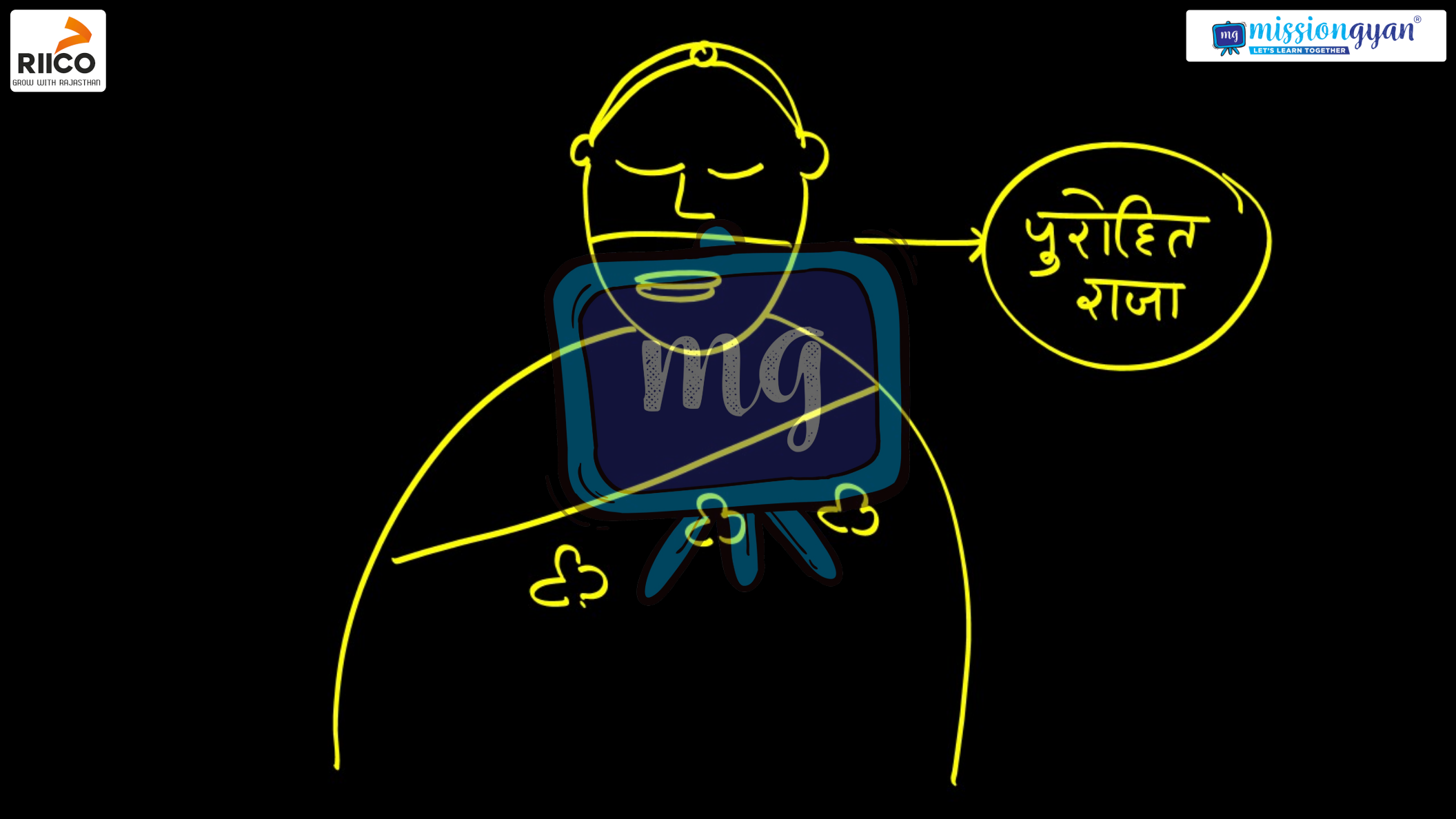
बांट

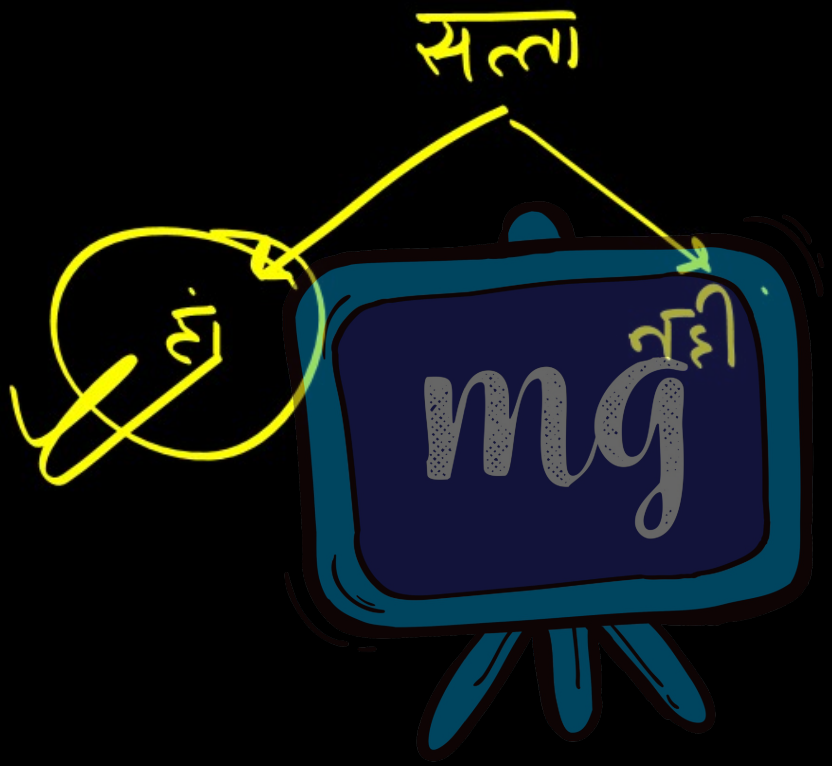
- विनिमय बांटों की परिशुद्ध प्रणाली से नियंत्रित थे।
- बांट चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे। घनाकार आकृति के होते थे।
- इन बांटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 ... इत्यादि) थे। जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।

- छोटे बांटों का प्रयोग आभूषणों तथा मनकों को तौलने ने में किया जाता होगा।
- धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं।




सत्ता ?
नष्ट
6
लोकतंत्र
1
समूह
5
राजशाही
2
व्यापारी
3
सैनिक
राजा
4
पुरोहित
राजा


पुरोहित
राजा


सत्ता
है
mg
नहीं

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शहर → घर, मनके
बांट, विशाल स्नानागार



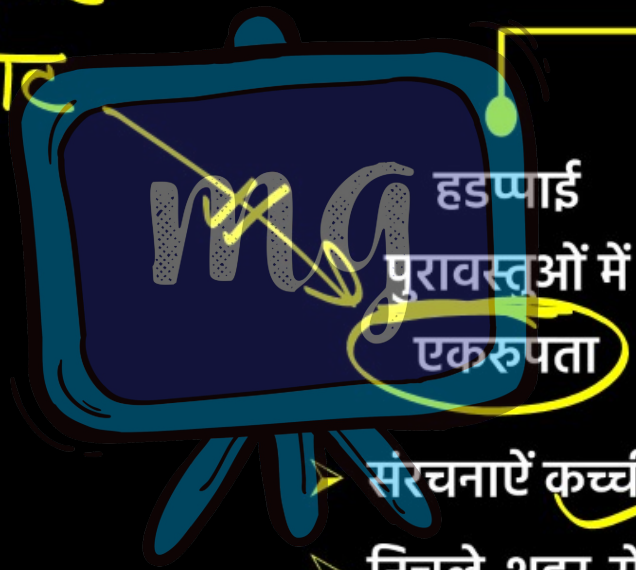
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एक शासन

मनके मुहर बांट

प्राचीन सत्ता



हडप्पाई पुरावस्तुओं में एकरुपता

श्रम संगठित करना

- संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
- निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महल

प्रासाद तथा शासक

शासन

- मोहनजोदड़ो के एक विशाल भवन को प्रासाद कहा गया, लेकिन कोई भव्य वस्तुएं नहीं मिलीं।
- एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित राजा' कहा गया।
- यह नाम मेसोपोटामिया के 'पुरोहित राजाओं' से समानता के आधार पर दिया गया।
- मेसोपोटामिया की कीलाक्षर लिपि पढ़ी जा चुकी थी, जिससे यह तुलना संभव हुई।

Q. अपना मत स्पष्ट करें की हड़प्पा सभ्यता में सत्ता थी या नहीं

~~a) हां~~

b) नहीं

Q. कोई दो कारण बताइये जिससे यह स्पष्ट हो की हड़प्पा सभ्यता में एक केन्द्रीय शासन व्यवस्था थी?

पुरावस्तु एकरूपता

ग्राम संगठन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

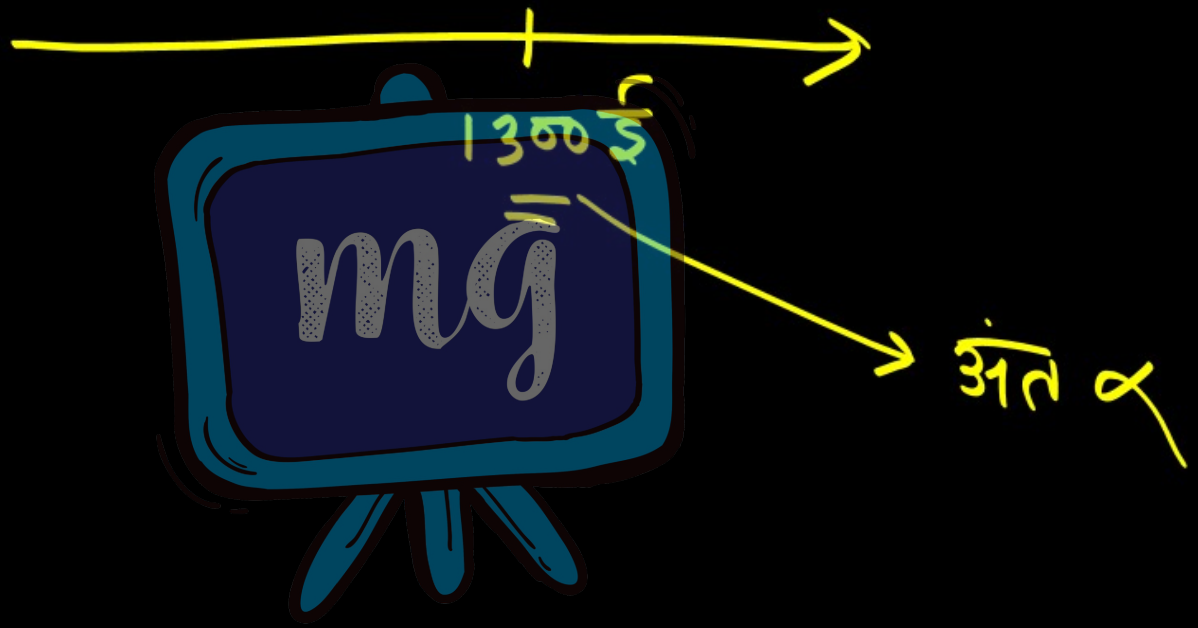
९. मेसोपोटामिया की लिपि का नाम लिखें ?

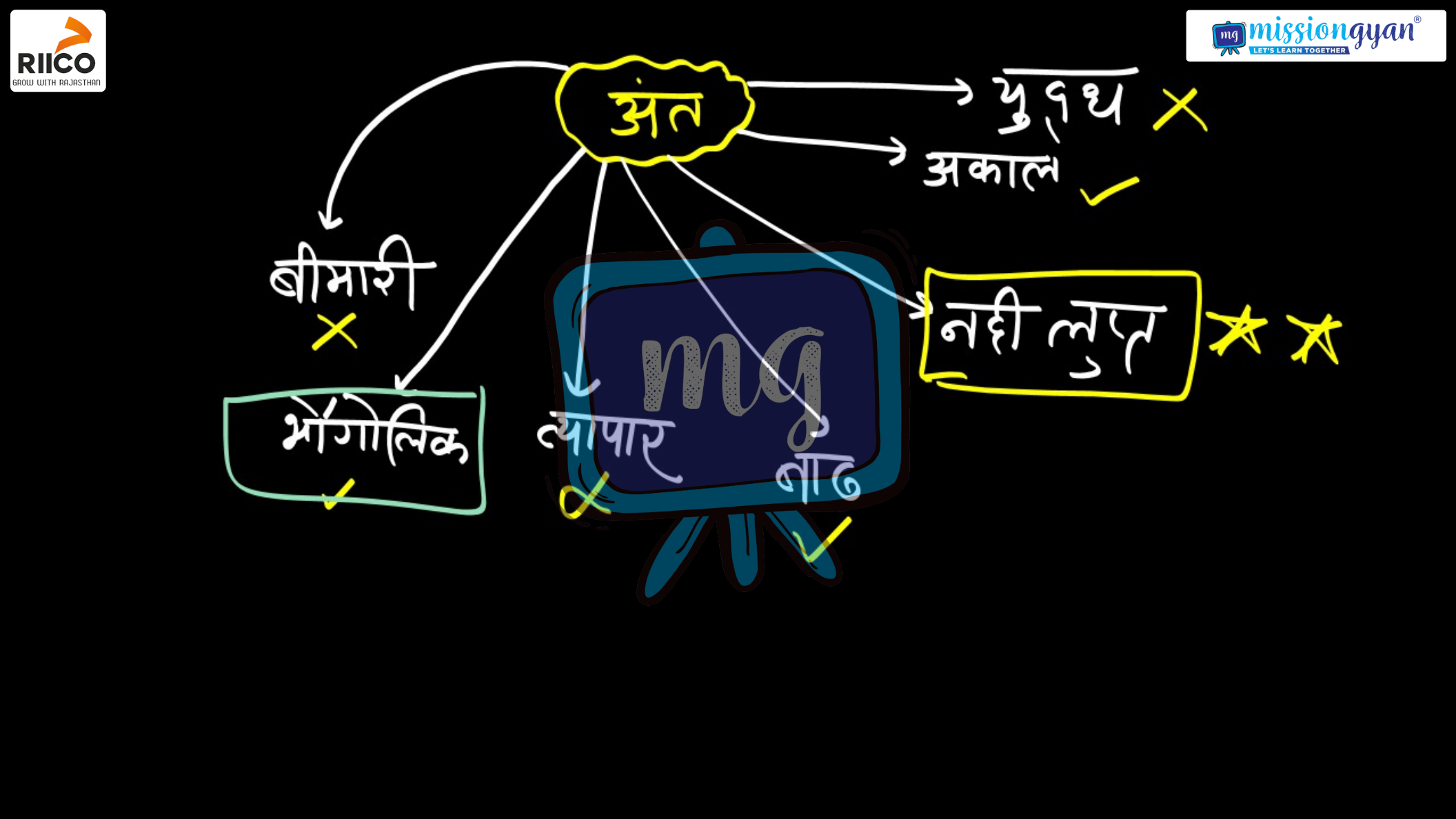
९. हड़प्पा सभ्यता की कला व्यवस्था पर अपनी राय ~~स्पष्ट~~ करे स्पष्ट

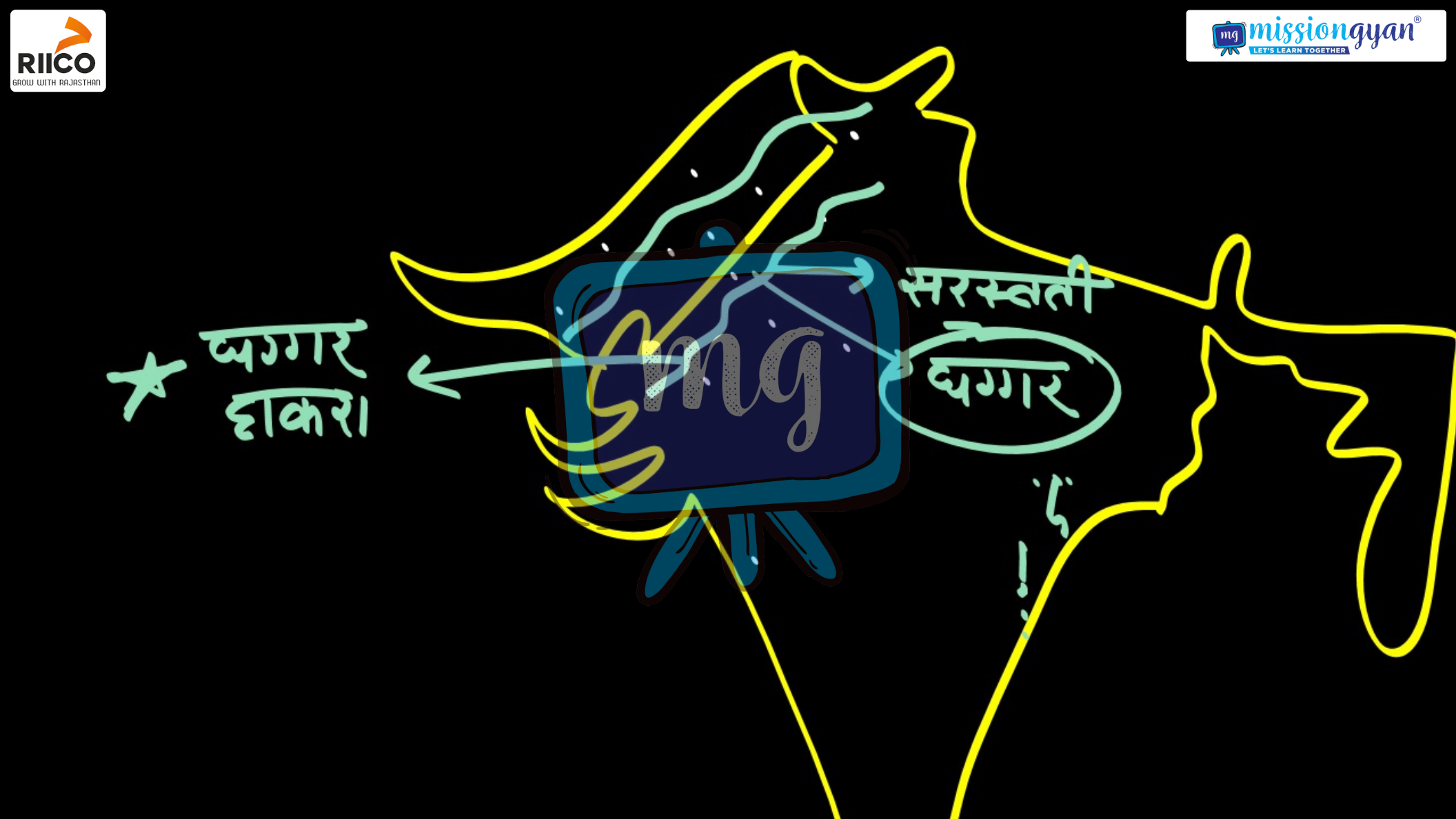


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER




अंत
युद्ध
अकाल
बीमारी
नदी लुप्त
भौगोलिक
व्यापार
बाढ़


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
★ घग्गर
द्वाकरा
सरस्वती
घग्गर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सभ्यता का अंत

- 1800 ई.पू. में चोलिस्तान जैसे विकसित हड़प्पा क्षेत्रों को त्याग दिया गया।
- गुजरात, हरियाणा, और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नई बस्तियों की आबादी बढ़ी।
- उत्तर हड़प्पा क्षेत्रों में भौतिक संस्कृति में बदलाव हुआ।
- विशिष्ट पुरावस्तुएं, लंबी दूरी का व्यापार, और शिल्प विशेषज्ञता समाप्त हो गईं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

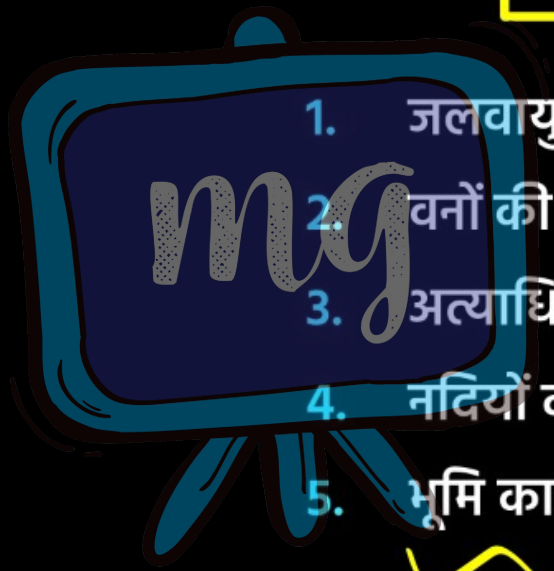
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शहरीय

नगरीय

- आवास निर्माण तकनीक और सार्वजनिक संरचनाओं का निर्माण बंद हो गया।
- ग्रामीण जीवन शैली प्रमुख हो गई; इन्हें उत्तर हड़प्पा या अनुवर्ती संस्कृतियां कहा गया।
- सभ्यता के पतन का मुख्य कारण राज्य के एकीकरण का अंत था।
- मुहरें, लिपि, मनके, मृदभाण्ड, और मानकीकृत बाँट गायब हो गए।
- शहरों का पतन हुआ, और उपमहाद्वीप में पुनः शहरों के विकास में एक सहस्राब्दि लग गई।

सभ्यता में परिवर्तन के कारण



1. जलवायु परिवर्तन
2. वनों की कटाई
3. अत्याधिक बाढ
4. नदियों का सूखना
5. भूमि का अत्यधिक उपयोग → मृदा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. उत्तर हड़प्पा/अनुवर्ती संस्कृत के बारे में बताइये ?

Q. किन कारणों से हम कह सकते हैं की 1400 ईपू से सभ्यता का पतन हुआ ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हड़प्पा सभ्यता की खोज

पुरातत्वविदों ने भौतिक अवशेषों से इतिहास के विभिन्न अंशों को जोड़ा, जिससे एक सभ्यता की खोज हुई।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कनिंघम का भ्रम

- भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के पहले डायरेक्टर जनरल कनिंघम ने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पुरातत्विक उत्खनन शुरु किया। कनिंघम और अन्य पुरातत्वविद् अपने अन्वेषणों के लिए साहित्य और अभिलेखों का अधिक उपयोग करते थे।
- कनिंघम की रुचि आरंभिक ऐतिहासिक काल (600 ई.पू. - 400 ई.पू.) और उसके बाद के कालों में थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

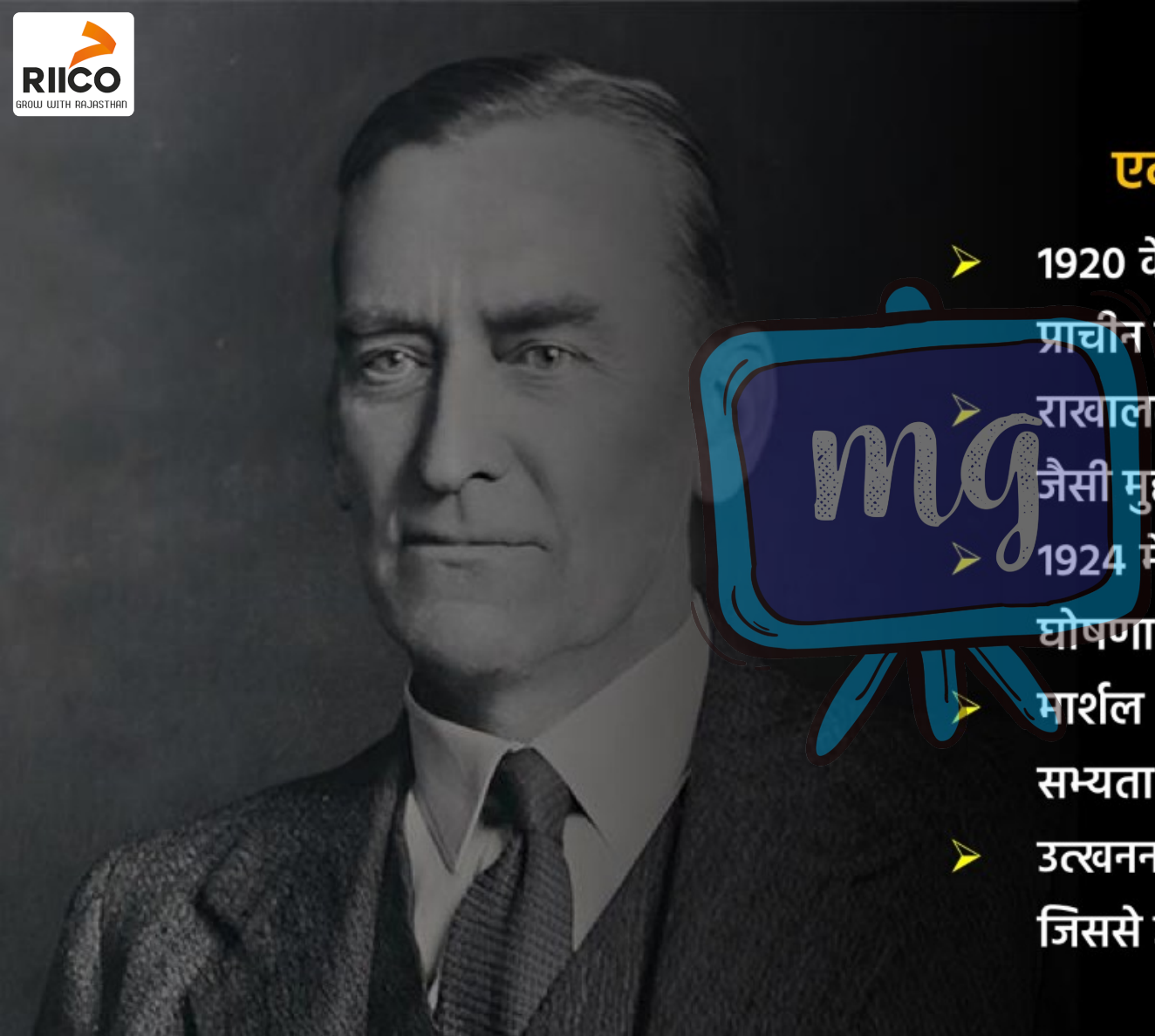
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों के वृतांतों का उपयोग आरंभिक बस्तियों की पहचान के लिए किया।
- सर्वेक्षण के दौरान मिले अभिलेखों का संग्रहण, प्रलेखन और अनुवाद किया।
- सांस्कृतिक महत्व की पुरावस्तुओं की खोज में रुचि रखते थे।
- उन्हें हड़प्पाई पुरावस्तुएं मिलीं, लेकिन उनकी प्राचीनता का अनुमान नहीं लगा सके।

- एक अंग्रेज ने हड़प्पाई मुहर दी, परंतु उसे सही कालखंड में दिनांकित करने में असफल रहे।
- भारतीय इतिहास का प्रारंभ गंगा की घाटी के शहरों से मानने की अवधारणा के कारण हड़प्पा के महत्व को समझने में चूक गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



एक नवीन प्राचीन सभ्यता

- 1920 के दशक में दयाराम साहनी ने हड़प्पा में प्राचीन मुहरें खोजीं।
- राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो से हड़प्पा जैसी मुहरें खोजीं।
- 1924 में जॉन मार्शल ने सिंधु घाटी सभ्यता की घोषणा की।
- मार्शल ने मेसोपोटामिया के समकालीन सभ्यता की जानकारी दी।
- उत्खनन में क्षैतिज इकाइयों का प्रयोग किया, जिससे जानकारी लुप्त हो गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों के वृतांतों का उपयोग आरंभिक बस्तियों की पहचान के लिए किया।
- सर्वेक्षण के दौरान मिले अभिलेखों का संग्रहण, प्रलेखन और अनुवाद किया।
- सांस्कृतिक महत्व की पुरावस्तुओं की खोज में रुचि रखते थे।
- उन्हें हड़प्पाई पुरावस्तुएं मिलीं, लेकिन उनकी प्राचीनता का अनुमान नहीं लगा सके।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नयी तकनीकें तथा प्रश्न

- 1944 में आर.ई.एम. व्हीलर ने स्तर विन्यास आधारित खुदाई शुरू की।
- व्हीलर ने पुरातत्व में सैनिक परिशुद्धता का समावेश किया।
- विभाजन के बाद प्रमुख हड़प्पा स्थल पाकिस्तान में चले गए।
- भारतीय पुरातत्वविदों ने कालीबंगन, लोथल, राखीगढ़ी, और धौलावीरा की खोज की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

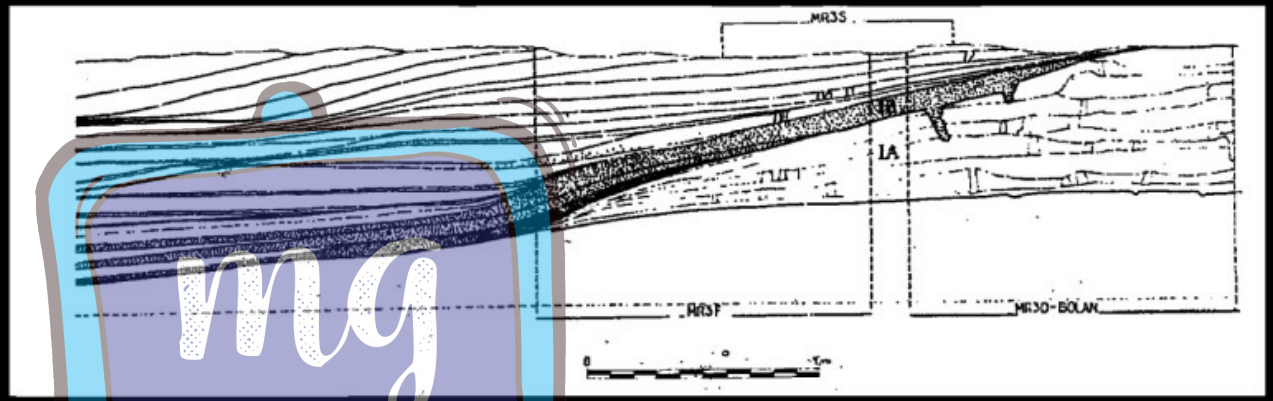
- कुछ पुरातत्वविद सांस्कृतिक उपक्रम तो कुछ भौगोलिक कारणों को समझने का प्रयास करते हैं।
- 1980 के बाद हड़प्पाई पुरातत्व में अंतरराष्ट्रीय रुचि बढ़ी।
- आधुनिक तकनीकों से मिट्टी, पत्थर, धातु, और जैव अवशेषों का अध्ययन किया जाता है।

- पुरातात्त्विक स्थल वस्तुओं और विचारों के निर्माण, उपयोग और त्याग से बनते हैं।
- लगातार एक स्थान पर रहने से भूमि के उपयोग से आवासीय टीले (टोला) बन जाते हैं।
- प्राकृतिक क्रियाओं (पानी, कटाव आदि) से भूमि का स्वरूप बदलता है।
- टीलों में मिले स्तरों से प्राचीन वस्तुएं मिलती हैं, जो आवास का इतिहास बताती हैं।

- प्रत्येक स्तर रंग, प्रकृति और वस्तुओं में भिन्न होता है। जिन स्तरों में ये लक्षण नहीं होते, उन्हें "वंवर सार" कहते हैं।
- सामान्यतः, सबसे निचला स्तर प्राचीनतम और ऊपरी नवीनतम होता है।
- इन स्तरों के अध्ययन को स्तरक्रम विज्ञान कहा जाता है।
- मिले पुरावस्तुओं से सांस्कृतिक काल-खण्डों का निर्धारण होता है।
- इससे पुरास्थल का पूरा सांस्कृतिक इतिहास जाना जा सकता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



एक छोटे टीले का स्तरविन्यास ध्यान से देखने पर
पता चलेगा कि ये स्तर सदैव क्षैतिज नहीं हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अतीत को जोड़कर पूरा करने की समस्याएं

- हड़प्पाई लिपि से सभ्यता के बारे में जानकारी नहीं मिलती।
- जैविक सामग्री जैसे कपड़ा, लकड़ी, चमड़ा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सड़ जाते हैं।
- पत्थर, पकी मिट्टी, और धातु ही संरक्षित रहती हैं।
- अधिकांश वस्तुएं पुनः चक्रित की जाती थीं, और अनुपयोगी वस्तुएं ही फेंकी जाती थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बहुमूल्य वस्तुएं या तो पहले ही खोजी जा चुकी थीं या संग्रहण में थीं।
- कई खोजें प्रारूपिक न होकर संयोजिक थीं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खोजों का वर्गीकरण

- पुरातत्वविद खोजों को चार सिद्धांतों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं।

(i) **प्रयुक्त पदार्थों द्वारा :** पत्थर, मिट्टी, धातु, अस्थि, हाथी दांत आदि का उपयोग।

(ii) **उपयोगिता के आधार पर :** वस्तु औजार, आभूषण, या आनुष्ठानिक वस्तु हो सकती है।

- उपयोगिता का निर्धारण आधुनिक समानताओं और खोज के स्थान (घर, नाला, कब्र, भट्टी) से होता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खोजों का वर्गीकरण

(iii) **अप्रत्यक्ष साक्ष्यों द्वारा :** कपास के टुकड़े जैसी खोजें, मूर्तियों के चित्रण से पहनावे की जानकारी।

(iv) **संदर्भों की रूपरेखाओं द्वारा :** सही संदर्भ मिलने पर हड़प्पाई मुहर को समझा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

व्याख्या की समस्याएँ

- धार्मिक प्रथाओं की व्याख्या पुरातत्वविदों के लिए जटिल है।
  - (i) अपरिचित वस्तुओं को धार्मिक महत्व का माना गया।
  - (a) आभूषणों से लदी नारी मूर्तियां "मातृदेवी" के रूप में वर्गीकृत।
  - (b) मानकीकृत मुद्रा में बैठी पुरुष मूर्तियां "पुरोहित राजा" से जोड़ी गईं।

(c) विशाल स्नानागार और वेदियों को आनुष्ठानिक महत्व का माना गया।

- आद्य शिव की मुहरें ऋग्वेद के रुद्र के चित्रण से मेल नहीं खातीं।
- धर्म के आरंभिक और बाद के स्वरुप समान नहीं हो सकते।
- नीति "जात से अज्ञात की ओर बढ़ने" की पुरातत्व में उपयोगी हो सकती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

एक 'आक्रमण' के साक्ष्य

- डैडमैन लेन एक सँकरी गली है. जिसकी चौड़ाई 3 से 6 फीट तक परिवर्ती है... वह बिंदु जहाँ यह गली पश्चिम की ओर मुड़ती है, 4 फीट तथा 2 इंच की गहराई पर एक खोपड़ी का भाग तथा एक वयस्क की छाती तथा हाथ के ऊपरी भाग की हड्डियाँ मिली थीं। ये सभी बहुत भुरभुरी अवस्था में थीं। यह धड़ पीठ के बल, गली में आड़ा पड़ा हुआ था। पश्चिम की ओर 15 इंच की दूरी पर एक छोटी खोपड़ी के कुछ टुकड़े थे। इस गली का नाम इन्हीं अवशेषों पर आधारित है। जॉन मार्शल, मोहनजोदड़ो एंड द इंडस सिविलाईजेशन, 1931 से उद्धृत।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 1925 में मोहनजोदड़ो के इसी भाग से सोलह लोगों के अस्थि-पंजर उन आभूषणों सहित मिले थे जो इन्होंने मृत्यु के समय पहने हुए थे। बहुत समय पश्चात 1947 में आर.ई.एम. व्हीलर ने जो भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल थे, इन पुरातात्विक साक्ष्यों का उपमहाद्वीप में ज्ञात प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के साक्ष्यों से संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने लिखाः ऋग्वेद में पुर शब्द का उल्लेख है जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़। आर्यों के युद्ध के देवता इंद्र को पुरंदर, अर्थात् गढ़-विध्वंसक कहा गया है।

ये दुर्ग कहाँ हैं... या थे...? पहले यह माना गया था कि ये मिथक मात्र थे... हड़प्पा में हाल में हुए उत्खननों ने मानो परिदृश्य बदल दिया है। यहाँ हम मुख्यतः अनार्य प्रकार की एक बहुत विकसित सभ्यता पाते हैं जिसमें अब प्राप्त जानकारी के अनुसार विशाल किलेबंदियाँ की गई थीं... यह सुदृढ़ रूप से स्थिर सभ्यता कैसे नष्ट हुई? हो सकता है जलवायु संबंधी, आर्थिक अथवा राजनीतिक हास ने इसे कमजोर किया हो, पर अधिक संभावना इस बात की है कि जानबूझ कर तथा बड़े पैमाने पर किए गए विनाश ने इसे अंतिम रूप से समाप्त कर दिया।

यह मात्र संयोग ही नहीं हो सकता कि मोहनजोदड़ों के अंतिम चरण में आभास होता है कि यहाँ पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों का जनसंहार किया गया था। पारिस्थितिक साक्ष्यों के आधार पर इंद्र अभियुक्त माना जाता है।